मतांतरण पर करारी चोट है

शिकागो में स्वामी विवेकानंद का भाषण

राजेश झा

शिकागो में अपने भाषण द्वारा ११ सितंबर १८९३ को स्वामी विवेकानंद ने 'वैश्विक धर्म संसद' के आयोजन को निरर्थक सिद्ध कर दिया और **ईसाइयत के प्रचार एवं उसको सर्वश्रेष्ठ सिद्ध करने की इस धर्मसंसद के छुपे एजेंडे को सार्वजनिक कर दिया**।उन्होंने कहा- सभी लोगों को अपने-अपने धर्म का पालन करना चाहिए और अपने धर्म मे बने रहते हुए दूसरे धर्म की अच्छाइयों को भी आत्मसात करना चाहिए। **स्वामी विवेकानंद ने उस मंच से मतान्तरण का कड़ा विरोध किया।** उनके प्रखर प्रहार का प्रभाव था कि 'भारत में बाइबिल की अप्रासंगिकता' उस समय के श्रेष्ठ ईसाईयों ने भी स्वीकारी तथा अमेरिकी प्रेस ने लिखा "स्वामी विवेकानंद शिकागो में आहूत 'धर्म संसद' की महानतम विभूति थे,उन्हें सुनने के बाद हमें महसूस हो रहा है कि भारत जैसे एक प्रबुद्ध राष्ट्र में मिशनरियों को भेजकर हम कितनी बडी मूर्खता कर रहे हैं।" विश्व धर्म सभा में जब सभी पंथ स्वयं को ही श्रेष्ठ सिद्ध करने का प्रयास कर रहे थे, तब स्वामी विवेकानंद ने कहा था कि भारत का विचार सभी सत्यों को स्वीकार करता है।

उल्लेखनीय है कि शाम -दाम -दंड -भेद से मतांतरण में लगे ईसाई मिशनरियों और कट्टरपंथी संगठनों को कठघरे में खड़े करते हुए स्वामी विवेकानंद ने सीधे -सीधे आरोप किया था कि " सांप्रदायिकता, कट्टरता और इसके भयानक वंशजों के धार्मिक हठ ने लंबे समय से इस खूबसूरत धरती को जकड़ रखा है।उन्होंने इस धरती को हिंसा से भर दिया है और कितनी ही बार यह धरती खून से लाल हो चुकी है। न जाने कितनी सभ्यताएं तबाह हुईं और कितने देश मिटा दिए गए। यदि ये ख़ौफ़नाक राक्षस नहीं होते तो मानव समाज कहीं ज़्यादा बेहतर होता, जितना कि अभी है।' उन्होने पूरी शक्ति से स्थापित किया कि भारत आदिकाल से विश्व- गुरु रहा है"। उन्होने यह भविष्यवाणी भी की थी कि ' उनका(ईसाई मिशनरियों का) वक़्त अब पूरा हो चुका है. मुझे उम्मीद है कि इस सम्मेलन का बिगुल सभी तरह की कट्टरता, हठधर्मिता और दुखों का विनाश करने वाला होगा, चाहे वह तलवार से हो या फिर कलम से'।

स्वामी विवेकानंद ने सप्रमाण विश्व को बताया कि “ हिन्दू धर्म का मैं अनुयायी हूँ जिसने जगत को उदारता और प्राणी-मात्र को अपना समझने की भावना दिखलाई है। इतना ही नहीं हम सब पंथों को सच्चा मानते हैं और हमारे पूर्वजों ने प्राचीन काल में भी प्रत्येक अन्याय पीड़ित को आश्रय दिया है। हमारे देश ने सभी मतों और सभी देशों के सताए गए लोगों को अपने यहां शरण दी , मुझे गर्व है कि

हमने अपने दिल में इसराइल की वो पवित्र यादें संजो रखी हैं जिनमें उनके धर्मस्थलों को रोमन हमलावरों ने तहस-नहस कर दिया था और फिर उन्होंने दक्षिण भारत में शरण ली। मुझे गर्व है कि मैं एक ऐसे धर्म से हूं जिसने पारसी धर्म के लोगों को शरण दी और लगातार अब भी उनकी मदद कर रहा है।"

अपने भाषण के क्रम में स्वामी विवेकानंद ने एक श्लोक सुनाकर सन्देश दिया कि जिस तरह अलग-अलग जगहों से निकली नदियां, अलग-अलग रास्तों से होकर आखिरकार समुद्र में मिल जाती हैं, ठीक उसी तरह मनुष्य अपनी इच्छा से अलग-अलग रास्ते चुनता है।ये रास्ते देखने में भले ही अलग-अलग लगते हैं, लेकिन ये सब ईश्वर तक ही जाते हैं। उन्होने सभा को सम्बोधित करते हुए कहा - 'मौजूदा सम्मेलन जो कि आज तक की सबसे पवित्र सभाओं में से है, वह अपने आप में गीता में कहे गए इस उपदेश इसका प्रमाण है: "जो भी मुझ तक आता है, चाहे कैसा भी हो, मैं उस तक पहुंचता हूं. लोग अलग-अलग रास्ते चुनते हैं, परेशानियां झेलते हैं, लेकिन आखिर में मुझ तक पहुंचते हैं।"

स्वामी विवेकानंद ने यह कहकर सभी श्रोताओं के अंतर्मन को छू लिया कि हिंदू तमाम पंथों को सर्वशक्तिमान की खोज के प्रयास के रूप में देखते हैं। वे जन्म या साहचर्य की दशा से निर्धारित होते हैं, प्रत्येक प्रगति के एक चरण को चिह्नित करते हैं। स्वामीजी द्वारा दिये गए अपने संक्षिप्त भाषण में हिंदू धर्म में निहित विश्वव्यापी एकता के तत्व और उसकी विशालता के परिचय ने पश्चिम के लोगों के मनों में सदियों से बना दी गयी भारत के प्रति नकारात्मक दृष्टि को बदलकर रख दिया।उनके उस छोटे से भाषण ने ही संसद की आत्मा को हिला दिया। चारों तरफ विवेकानंद की प्रशंसा होने लगी।अमेरिकी अख़बारों ने विवेकानंद को “धर्म संसद” की सबसे बड़ी हस्ती के रूप में सबसे प्रसिद्ध और प्रभावशाली व्यक्ति बताया।

स्वामी विवेकानंद ने अवसर और अनुग्रह के बाद भी ईसाईयों को हिन्दू नहीं बनाया

शिकागो के धर्म-संसद में भारतीयता का सिक्का जमा देनेवाले स्वामी विवेकानंद को अनेक यूरोपीय और अमेरिकी संस्थानों ने हिंदुत्व तथा अन्य विषयों पर भाषण के लिए आमंत्रित किया जिसके कारण वे लगभग दो वर्षों तक उस क्षेत्र में ही रह गए। स्वामीजी ने लिखा है कि २७ सितम्बर १८९३ को संसद समाप्त हो गई। इसके बाद वे दो वर्षों तक पूर्वी और मध्य अमेरिका, बोस्टन, शिकागो, न्यूयॉर्क, आदि जगहों पर उपदेश देते रहे। १८९५ और १८९६ में उन्होंने अमेरिका और इंग्लैंड में अनेक स्थानों पर भी उपदेश दिए (विवेकानंद साहित्य भाग -६, पृष्ठ १४४) ।

अनेक बार ऐसे अवसर आये जब स्थानीय समाज के प्रभावशाली लोगों ने ईसाइयत छोड़कर हिन्दू धर्म स्वीकारने की इच्छा व्यक्त की , इसके लिए हर तरह का दवाब भी उनपर बनाने की चेष्टा की लेकिन **स्वामी विवेकानंद ने किसी का मतांतरण नहीं किया बल्कि उनको कहा-'आप अच्छा ईसाई बनिए वही हिंदुत्व की सबसे बड़ी सेवा होगी।भारत को मतांतरित हिन्दुओं नहीं बल्कि धन और तकनीक की**

आवश्यकता है,आप संभव हो तो ये सुविधाएं उपलब्ध करवा दें।' स्वामी विवेकानंद के इस निवेदन का प्रतिसाद यह है कि उन्होने भारत लौटने से पूर्व ही 'रामकृष्ण मिशन ' की स्थापना कर लिया तथा स्वदेश लौटते ही रामकृष्ण मिशन के तहत देश भर में शिक्षा का प्रचार -प्रसार प्रारम्भ कर दिया। आज उनकी संस्था से शिक्षित सैंकड़ों विभूतियाँ राष्ट्र निर्माण में संलग्न हैं।

एक बार एक “विदेशी लेडी” ने स्वामी जी बोला कि मैं आपसे शादी करना चाहती हूं ताकि आपके जैसा मेरा एक बेटा हो । तो स्वामी विवेकानंद ने कहा इसके लिए मुझसे विवाह करने की आवश्यकता नहीं है,मैं आपका बेटा बन जाता हूं।' स्वामी जी के उत्तर से उस विदेशी महिला सर स्वामी जी के सम्मान में झुक गया। स्वामी विवेकानंद की कथनीऔर करनी में फर्क नहीं था।

जिन ढूंढा तिन पाइयाँ , गहरे पानी पैठ

स्वामी विवेकानंद ने सिद्ध कर दिया कि अगर स्वयं पर अटूट विश्वास हो तो हर लक्ष्य को प्राप्त किया जा सकता है। अगर स्वयं पर भरोसा करेंगे तभी भगवान भी आप पर भरोसा करेगा।उन्होंने लोगों को वीर, साहसी, सांसारिक और दयालु बनने की प्रेरणा दी। शिकागो व्याख्यान में स्वामी विवेकानंद ने तीन भविष्यवाणियाँ की थीं - (क) उन्होंने कहा था, “भारत अकल्पनीय परिस्थितियों के बीच अगले ५० वर्षों में ही स्वाधीन हो जाएगा” ठीक वैसा ही हुआ (ख) दूसरी भविष्यवाणी थी कि रूस में पहली बार श्रमिक क्रांति होगी, जिसके होने या हो सकने के बारे में किसी को कल्पना तक न थी। ये कथन भी सत्य सिद्ध हुआ और (ग) तीसरी भविष्यवाणी थी- भारत एक बार फिर समृद्ध व शक्ति की महान उँचाइयों तक उठेगा और अपने समस्त प्राचीन गौरव को प्राप्त कर आगे बढ़ेगा। आज भारत उस पथ पर अग्रसर होता हुआ दिख भी रहा है और पूरी दुनिया स्वावलंबी, संस्कारित, संगठित तथा समृद्धशाली भारत के इस वर्चस्व को देख भी रही है व मान भी रही है।

संदर्भ

विवेकानंद साहित्य भाग -६, पृष्ठ १४४ , पृष्ठ -३४४

https://www.bbc.com/hindi/india-41228101